International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 164-165

जौनपुर की लोक साहित्य चेतना अध्ययन के अन्तर्गत संकलित खेलगीतों का महत्व

डॉ0 अंजू पाण्डेय

असि0 प्रोफेसर, के0 डी0 एस0 महाविद्यालय, पाली, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

जौनपुर अंचल उत्तर–प्रदेश के वाराणसी मंडल का एक जनपद है, जौनपुर जनपद की पश्चिमी सीमा पर इलाहाबाद और प्रतापगढ़, दक्षिणी सीमा पर संत रविदास नगर (भदोही) दक्षिण–पूर्वी सीमा पर वाराणसी, पूर्वी सीमा पर आजमगढ़ जिला तथा उत्तरी सीमा पर सुल्तानपुर जनपद निश्चित करता है। ये सीमायें यद्यपि कृत्रिम है, लेकिन कुछ सीमाओं का निर्धारण प्राकृतिक नदियाँ करती है, जैसे दक्षिणी भाग की कुछ सीमा का निर्धारण वरूना नदी और मॉगुर नदी की एक धारा सुल्तानपुर और जौनपुर जनपद को विभाजित करती है, मॉगुर नदी के कुछ दुर पर जौनपुर जनपद और आजमगढ़ की कुछ सीमा को बाटने का काम करती है।

जौनपुर शर्की साम्राज्य की राजधानी रही है। शर्की सल्तनत के बहादुर बादशाहों ने यहाँ राज किया है। अतः उन बादशाहों ने की वीरता का वर्णन लोकगीत के रूप में यत्र–तत्र उपलब्ध हो जाते है, जो केवल जौनपुर नगर के आस–पास के क्षेत्रों में ही मुस्लिम समुदाय द्वारा गाये जाते है। इन गीतों को जनपद के बाहर लोकप्रियता नहीं मिल सकी है। खेद है कि यह गीत संकलनकर्ताओं के दृष्टि–पथ में अब तक नहीं आ सके हैं। इन गीतों को जौनपुर की एक देन के रूप में भी स्वीकार किया जा सकता है। लोकगीतों के क्षेत्र में ही नहीं लोकगाथाओं, लोककथाओं, लोरियों और जातीय गीतों के क्षेत्र में भी जौनपुर का बहुत बड़ा योगदान है। यहाँ जोगियों की संख्या अधिक है, जिनके परिवार जौनपुर जनपद के गांवों में निवास करते है। इस जनपद के लोग अवधी मिश्रित भोजपुरी भी बोलते है।

किसी भी देश के खेल–कूद के अध्ययन से वहां के निवासियों के स्वभाव, साहस और शक्ति का पता चलता है, जिस जाति के खेल–गीत, जितने साहसपूर्ण और वीरता से युक्त होंगे वह जाति उतनी ही साहसी समझी जायेगी। खेलकूद, लोक–संस्कृति के प्रधान अंग हैं। इनके अनुसंधान से यह जाना जा सकता है कि आदिम जातियों की अवस्था कैसी थी? उनके मनोरंजन के क्या–क्या साधन थे?

भारतवर्ष में प्रचलित खेल–कूदों की संख्या असंख्य है। जौनपुर जनपद में दो प्रकार के खेल प्रचलित हैं–

1. घर में खेले जाने वाले खेल
2. मैदान में खेले जाने वाले खेल।

दोनों प्रकार के खेलों में गीत का सहयोग पाया जाता है। कबड्डी एक ऐसा खेल है, जिसने अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त कर ली है। जौनपुर लोक में कबड्डी बहुप्रचलित खेल है। कबड्डी खेलने के अवसर पर रोचक लोकगीत सुनने को मिलता है।

ए कबड़िया रेटा, भगत मोर बेटा।
भगताइन मोरी जोरी, खेलबि हम होरी।।
ए कबड़िया आइले, तबला बजाइले।
तबला में पइसा, लाल बगइचा।।
आव तानी हो, परहइ जनि हो ।
टांग जाई टूटी कपार जाई फूटी।
लड़कपन जाई छूटी।।

आम छू आम छू कउड़ी झनक छू।
आम छू आम छू कउड़ी बदाम छू।।

संकलित खेल गीत में किसी काल्पनिक व्यक्ति की कल्पना करके मनोविनोद के माध्यम से खेलों के उमंग को बढ़ाया जाता है। खेलों के दौरान मानसिक थकान को दूर करने में ये लोक–गीत व्यवहारिक उपाय के रूप में प्रयोग में लाये जाते हैं।

छोटे बच्चों के भी अपने खेलगीत होते हैं, जिसके माध्यम से वह अपनी बालक्रीड़ाओं को उमंग से भरपूर बनाते हुए अपने खेल को रोचकता प्रदान करते हैं। संकलित खेल गीतों में ऐसा ही मनभावन लोकगीत जौनपुर लोक के प्रत्येक आंगन की शोभा बढ़ाता है।

तार कांटों तरकुल काटो, काटो रे बन खाजा।
हाथी पर के घुघुरा चमकि चले राजा।।
राजा के रजइया अवंरू बाबू के दुपाटा।
इचि मारों, खींचि मारो, मसूर अइसन बेटा।।
ए हाड़ी झिकड़ा बछेड़ी लागे धूँआ।

सासु पकवली गलगल पूआ
टपने खइलीं घिअवाह पूआ।।
हमरा के देहली तेलहवा पूआ
ना खईबी पूआ, खेलबी जूआ।
ना खईबी पूआ, खेलबी जूआ।

उपरोक्त गीत खेल गीत में बालकों के समूह से किसी एक बालक द्वारा यह गीत गाया जाता है। गीत गाते समय अन्य बालक चुप–चाप बैठे रहते हैं। इस खेल की प्रमुख शर्त यह है कि गीत गाते समय कोई न बोले। यदि कोई गीत गाते समय बोल उठता है कि समूह के द्वारा उसे दण्डस्वरूप कोई शारीरिक श्रम करना पड़ता है। यह क्रिया कुछ समय तक दोहराई जाती है। फिर बालक अपने–अपने घरों को चले जाते हैं।

जौनपुर लोक के खेलगीतों में बाल खेलगीत काफी मनभावन एवं मनोरंजक होते हैं। शाम के समय चौपाल या पंचायत भवन या किसी विशिष्ट व्यक्ति के घर के पास बालकों का उच्छृंखलित, मदमस्त झुण्ड इकट्ठा होता है तो आस–पास लोक में निवास करने वाले प्रौढ़ भी अपने बालकों के निश्छल एवं प्रेमपूर्ण खेल व्यवहार को देखने लिए इकट्ठा हो जाते हैं। बच्चों के झुण्ड में कोई बालक किसी प्रकार को उद्दण्डता या चालाकी करता है तो प्रौढ़ द्वारा बालक को गलती न करने की नसीहत दी जाती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि बालक समूह के साथ सामंजस्य एवं नेतृत्व कौशल के गुणों को स्वयं के अन्दर प्रस्फुटित होने का अवसर प्रदान करता है।

अर्थात खेल एवं लोकगीतों के माध्यम से बालक में सामाजिक, भाषिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास देखने को मिलता है। ऐसा ही एक लोक प्रचलित संकलित गीत प्रस्तुत है

ओका–बोका तीव तड़ोका।
लउवा लांची चन्दन काठी।
बाग में बगउवा डोले।
सावन में करइला फूले।
ओ करइला के नाव का?
इजइल बिजइल, पनवा फुलवा
ढोढ़िया पंचक।।

प्रस्तुत गीत जौनपुर लोक में बच्चों के समूह का अति प्रचलित खेलगीत है। इस खेल में दोनों हाथों की हथेलियों को पकड़कर यह गीत गाया जाता है। गीत पूरा होने पर बच्चे उस बच्चे को गुदगुदाते हैं, जिसके हाथ को पकड़कर यह गीत गाया जाता है। यह खेल प्रौढ़ों एवं बच्चों के बीच भी पारस्परिक भागीदारी द्वारा इसी गीत के माध्यम से प्रचलित है।

जौनपुर की लोक साहित्य चेतना अध्ययन के अन्तर्गत संकलित खेल गीतों की लम्बी श्रृंखला है। कुछ प्रमुख गीतों का वर्णन प्रस्तुत संदर्भ में किया गया है। खेलगीतों के माध्यम से बच्चे, किशोर, प्रौढ़ एवं बुजुर्ग सभी लोक निवासी स्वयं के मनःअभिव्यक्ति को स्वस्थ एवं मनोरंजक बनाते हैं। इन खेलगीतों के द्वारा जौनपुर लोक निवासियों के जीवंत एवं समरस समाज के जीवंत स्वरूप की अनुभूति की जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्रिपाठी, पं0 रामनरेश– कविता कौमुदी, भाग–5 (ग्राम गीत).
2. उपाध्याय, डॉ0 कृष्णदेव– भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन.
3. आर्चर, डब्लू0 जी– भोजपुरी ग्राम–गीत (बिहार रिसर्च सोसाइटी पटना).
4. गोस्वामी तुलसीदास– राम चरित मानस.
5. सिंह, ठा0 राम– चारण गीत.
6. सत्यार्थी, डॉ0 देवेन्द्र– गिद्धा, बेला फूले आधी रात.